दिअसम वैली स्कूल

हिंदी विभाग, ई - पत्रिका

उड़ान

अभिव्यक्ति की....

सत्रांक – अक्टूबर 2022

प्यारी माँ

माँ का धरती पर कोई जोड़ नहीं
माँ के समान कोई यहाँ अनमोल नहीं,
आती है बहुत याद तुम्हारी प्यारी मुस्कान
जब कभी होती हूँ बहुत ही परेशान।
बचपन में शिक्षक बनकर मुझे
नई-नई बातें सिखाती थीं,
नींद न आने पर रातों में मुझे
प्यार से लोरियाँ सुनाती थीं।
कभी-कभी दोस्त बनकर हँसी-मज़ाक करतीं
हमेशा चुपके-चुपके मुझे प्यार करतीं,
सिर पर प्यार से कभी, हाथ सहलातीं
अगर रूठ जाती थी मैं, तो हँसकर मनातीं।
मेरी सफलता पर खुश होकर
घर में हमेशा खुशियाँ मनाना,
हमारी खुशियों के लिए अपनी
हर चाहत को सबसे छिपाना।
दुनिया की इस भीड़ में जब कभी
उदास-सी हो जाती हूँ,
सभी को भूलकर मैं हमेशा
अपनी माँ की यादों में खो जाती हूँ।

हिमांशी मलिक
कक्षा –ग्यारहवीं

दोस्ती

कितने अजीब से हैं ये रिश्ते
जो बड़े नसीब से मिलते हैं,
साथी तो सभी होते हैं हमारे
पर अच्छे दोस्त नसीब से मिलते हैं।
कभी अनजाने में मिला
तो मस्ती वाला दोस्त बन गया,
कोई नोट्स वाला मिला
तो दिखाने वाला दोस्त बन गया।
बहुतों ने साथ मिलकर कभी
गालियों की बौछार खाई
कई दोस्तों के साथ रहकर
बहुत शर्मिंदगी भी आई।
ज़िंदगी की इस राह में
साथी बहुत से आए,
लेकिन, समय की गति के साथ,
हम साथ-साथ चल नहीं पाए।
सोचा नहीं था कि इस सफ़र में
ऐसा मुकाम भी आएगा,
जब सबसे अधिक ज़रूरत होगी
उस समय कोई दोस्त न रह जाएगा।
दोस्तों की दोस्ती का
कोई नियत मोल नहीं होता,
दोस्त अगर सच्चा हो
तो ज़रूरी कोई और नहीं होता।

हिमांशी मलिक
कक्षा –ग्यारहवीं

बाल-रचना संग्रह
सनी साइड विशेषांक

पिता

माँ आँखों की ज्योति है,
पर आँखों का तारा है-पिता।
माँ ममता का सागर है,
पर उसका किनारा है-पिता।
माँ से ही बनता घर है,
पर घर का सहारा है-पिता।
माँ से स्वर्ग, माँ से सुखधाम
माँ से ही हैं- चारों धाम,
पर इन सबका द्वार है-पिता।

वैष्णवी पूनिया
कक्षा –चार

पतंग

मैं हूँ पतली-सी
लंबी-चौड़ी पतंग
मैं कितना भी उड़ूँ
लेकिन,
नहीं होती मैं तंग।
हवा से बातें करती हूँ
दूसरी पतंगों से लड़ती हूँ,
मरने से नहीं डरती हूँ
हिम्मत से काम लेती हूँ।

श्रेयांश
कक्षा –चार

सवेरा

पूरब में सूरज है आया
नया सवेरा साथ में लाया,
महक रही हैं बाग में कलियाँ
मीठा गीत सुनातीं- चिड़ियाँ।

आराध्या इऑन बरुवा
कक्षा –चार

बारिश आई

बारिश आई, बारिश आई, आसमान से,
काले – काले बादल छाए आसमान में।
बिजली चमक रही है चम – चम,
बादल गरज रहे हैं गड़ – गड़।
फूल, पत्ते सब खिल उठे हैं,
मोर पंख फैलाए नाचने लगे हैं
बच्चे बारिश में छम – छम खेल रहे हैं।

नमन टिबरीवाल
कक्षा –चार

आई एक खबर

अभी ख़बर दिल्ली से आई
मक्खी रानी उसको लाई,
टिड्डे ने हाथी को मारा
हाथी क्या करता बेचारा!
घुस बैठा मटके के अंदर
मटके में थे ढाई बंदर,
उन्हें देखकर हाथी रोया
रोते – रोते ही वह सोया।
रुकी न पर आँसू की धारा
मटका बना समंदर खारा,
लगे डूबने हाथी, बंदर
सबने शोर मचाया मिलकर।
उसको सुनकर आया मच्छर
उसने लात जमाई कसकर,
मटका फूटा बहा समंदर
निकल पड़े सब हाथी, बंदर।

अधिराज जुगरान
कक्षा –तीन

साफ-सफाई

हमें बताया टीचर ने,
कक्षा में समझाया जी।
अपने घर में सब बच्चों,
रखो साफ सफाई जी।
दाँत हमेशा साफ रहें,
दर्द कभी न हो इनमें
रात को सोने से पहले,
खाना नहीं मिठाई जी।
बच्चे जो नाखूनों का
ध्यान नहीं रखते अपने,
सारी गंदगी खाना संग
उनके पेट में जाती जी।

आराध्या दीक्षित
कक्षा –तीन

पेड़ लगाएँ

आओ मिलकर खेलें खेल
खूब लगाएँ दिन भर पेड़,
पेड़ों में नित डालें पानी
खुरपी से न करें शैतानी।
पेड़ हमें नित छाया देते
फल-फूलों सी माया देते,
आओ मित्रों पेड़ लगाएँ,
जगत को हरा – भरा बनाएँ।

मान्या शर्मा
कक्षा –तीन

मोर

रंग – बिरंगे पंख फैलाते
चारों ओर शोर मचाते,
कौन हो सकता है कोई और
यह हमारा राष्ट्रीय पक्षी मोर।
हमारे देश की है यह शान
छत-छत फिरते अपनी जान,
डाले सबके घर में है डेरा
इनसे ही होता है, वहाँ सवेरा।

यादवी अग्रवाल
कक्षा –तीन

छोटे बच्चे

हम दो छोटे बच्चे हैं
मन के बड़े ही सच्चे हैं
कभी लड़ाई भी करते हैं
कभी प्यार से रहते हैं।
जब भी हम सोते हैं
मीठे सपनों में खोते हैं,
कभी सपनों में उड़ते हैं
कभी सपनों में तैरते हैं।

अहान बोथरा
कक्षा –तीन

मैं हूँ शेर

मैं हूँ शेर – मैं हूँ शेर
जंगल का राजा, मैं हूँ शेर
जंगल में जाऊँगा
जानवरों को खाऊँगा
मैं हूँ शेर – मैं हूँ शेर।

शौर्य मोर
कक्षा –तीन

चित्रों में अंतर खोजिए

चित्रकार से समान चित्र निर्माण करते समय कुछ गलतियाँ छूट गई हैं। उन गलतियों को खोजिए।

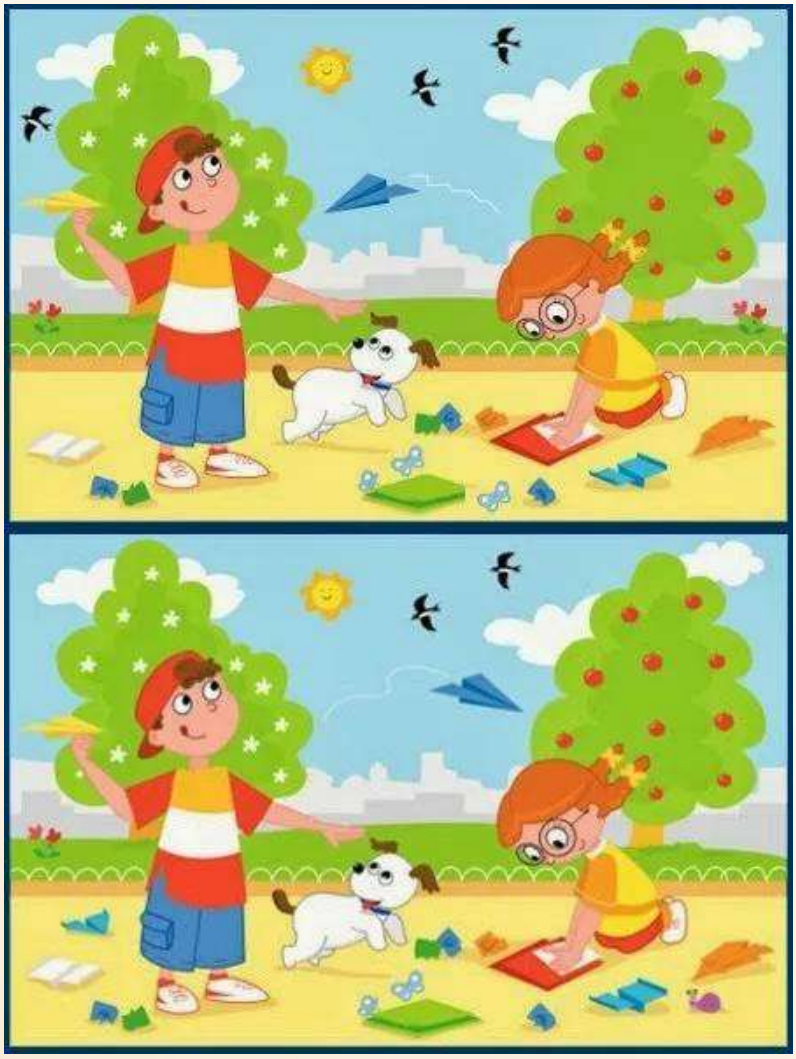

राजा की भूल

रामगढ़ में विजयसिंह नाम का एक राजा था। वह बहुत ही जल्द उत्तेजित हो जाता था। उसकी उत्तेजना के कारण राजदरबार के सभी सामंत और दरबारी बहुत ही परेशान रहते थे। क्रोधी स्वभाव के कारण कई बार राजा ने गलत फैसले किए थे जिसके कारण प्रजा को काफी नुकसान उठाना पड़ा था। सभी दरबारी हमेशा यही प्रयास करते थे कि राजा में थोड़ी-सी सहनशीलता आ जाए जिससे किसी भी निर्दोष को कोई समस्या न उठानी पड़े। राजा विजयसिंह कान के भी बहुत कच्चे थे जिसके कारण कई बार उन्होंने कई निर्दोषों को भी दोषी ठहरा दिया था। सभी लोग ईश्वर से यही प्रार्थना करते थे कि ईश्वर हमारे राजा को सद्‌बुद्‌धि दे जिससे कि राज्य का सही विकास हो सके।

एक दिन राजा विजयसिंह अपने विश्वासपात्र सैनिकों के साथ जंगल में शिकार खेलने गए। जंगल में राजा को एक हिरन दिखाई दिया और वह उस हिरन का पीछा करते-करते दूर निकल गया। घनी झाड़ियों के बीच हिरन कहीं छिप गया। राजा उसे खोजते-खोजते थक गया। हार मानकर उसने अपने सैनिकों को वहीं शिविर लगाकर आराम करने का सुझाव दिया। राजा के साथ आए सभी सैनिकों ने अपने घोड़ों को पेड़ों की छाँव में बाँध दिया और राजा की आज्ञा के अनुसार वही जंगल में शिविर लगाने में जुट गए। थोड़ी ही देर में जंगल में राजा के सैनिकों ने रंग-बिरंगे शिविर लगाकर तैयार कर दिए।

राजा के साथ गए हुए रसोइयों ने राजा, सेनापति और सभी औहदेदारों के लिए भोजन का प्रबंध करना शुरू कर दिया। राजा भी दिन भर जंगल में शिकार का पीछा करते-करते थक चुका था। वह मुँह-हाथ धोने के लिए शिविर से थोड़ी दूर पर स्थित तालाब पर पहुँच गया। जैसे ही वह राजा ने तालाब का पानी लेने के लिए अपने हाथ आगे की ओर बढ़ाए, दूर बैठे एक तोते ने उड़ते हुए राजा के हाथ पर चोंच से प्रहार कर दिया। राजा को उस तोते पर बड़ा क्रोध आया परंतु तोता उड़कर फिर से पेड़ की डाल पर पहुँच चुका था। राजा ने जैसे ही दोबारा तालाब का पानी लेने का प्रयास किया, एक बार फिर से तोते ने उड़कर राजा के हाथ पर अपनी चोंच से प्रहार कर दिया। अब राजा का क्रोध और भी बढ़ गया। जैसे ही तीसरी बार राजा ने पानी की ओर अपना हाथ बढ़ाया और तोते ने उसकी ओर उड़ान भरी; राजा ने तोते की दुष्टता का दण्ड देने के लिए तत्काल अपनी तलवार निकालकर तोते पर तेजी से वार कर दिया। तोता वहीं ढेर होकर गिर गया।

राजा वहीं खड़ा तोते की इस हरकत के बारे में सोच ही रहा था कि अचानक राजा का एक सेवक दौड़ते हुए उसकी ओर आया और बोला, “महाराज, इस तालाब का पानी मत पीजिएगा। इस पानी में ज़हर मिला है और यह पानी पीने से एक सैनिक की मौत हो चुकी है।" जैसे ही राजा ने यह सुना तुरंत उसका ध्यान उस तोते की ओर गया, जो शायद राजा को तालाब का पानी पीने से इसीलिए रोक रहा था ताकि राजा के प्राणों की रक्षा हो सके। राजा को अपने तात्कालिक निर्णय से बहुत दुःख हुआ। उसने उसी क्षण यह प्रतिज्ञा की कि अब वह क्रोध में आकर जल्दबाज़ी में कोई निर्णय नहीं लेगा। उसी दिन से राजा का स्वभाव बिल्कुल बदल गया। राजा के इस बदले हुए स्वभाव को देखकर उसके दरबारी बहुत खुश हुए।

आदित्य पाणिग्रही
कक्षा - ग्यारहवीं

पंछी की आत्मकथा

मैं एक पंछी हूँ। मेरा जन्म एक घने जंगल में हुआ था। मेरी माँ मुझे बहुत प्यार करती थी। उसने मुझे दाने चुगना और उड़ना सिखाया। मुझे पहली बार की उड़ान आज भी याद है। इसके बाद मैं अपने साथियों के साथ आकाश में दूर-दूर तक उड़ने लगा। पेड़ों की पतली टहनियों पर बैठ कर मैं अपनी मस्ती में झूलता था। मेरी आवाज़ से सूना आकाश भी गूँज उठता था। उन दिनों मैं सिर्फ मस्ती की पाठशाला का हिस्सा हुआ करता था। मेरी दिनचर्या का यह आवश्यक हिस्सा था। उस समय मेरा जीवन बहुत ही सुखी और आनंददायक था। उन दिनों को याद करता हूँ, तो आँखों में आँसू आ जाते हैं।

एक दिन एक चिड़ीमार उस जंगल में आया। वह मेरे रूप पर मोहित हो गया। उसने मुझे जाल में फँसाकर पिंजरे में कैद कर लिया। मैं बहुत छटपटाया, पर उस निर्दयी का दिल नहीं पसीजा। वह मुझे अपने घर ले गया। मैंने दो दिनों तक कुछ भी खाया-पिया नहीं। लेकिन चिड़ीमार पर उसका कोई असर नहीं पड़ा। उसने पिंजरा उठाया और बाजार में जाकर मुझे बेच दिया, तब से ही मैं अपने दु:ख भरे दिन काट रहा हूँ।

मेरा मालिक बहुत दयालु है। वे मुझे खाने के लिए मीठे फल देते हैं, पर जंगल के उन फलों की मिठास इन फलों में कहाँ ? मुझे मेरी अपनी माँ की याद आती है। क्या मुझे फिर से उड़ने का अधिकार मिलेगा ? क्या मुझे इसी तरह घुट-घुटकर मरना होगा। मैं अब यह अत्याचार और नहीं सह सकता। न जाने वह दिन कब आएगा, जब मैं अपने परिवार के साथ खुशी-खुशी जंगल में फिर से रह पाऊँगा। समाज से दया, करुणा, ममता और लज्जा समाप्त हो रही है। अगर इसी तरह से चलता रहा तो एक दिन पशु-पक्षी सब खत्म हो जाएँगे। पशु-पक्षियों के साथ इंसानों का इस तरह का व्यवहार उचित नहीं है। अब पशु-पक्षी इंसानों पर कभी भरोसा नहीं कर पाएँगे। इंसानियत खत्म होती जा रही है।

अगर हम चाहते हैं कि हमारा गुलशन चहकता रहे, तो हमें पशु-पक्षियों का ध्यान रखना पड़ेगा। पक्षियों को आज़ादी से जीने देना होगा, जिससे हमारा वातावरण, उनके चहचहाने से गुंजायमान रहे और उसके लिए हमें फिर से एक सुंदर वातावरण बनाना होगा।

आरुषि मित्तल
कक्षा - दसवीं

वर्ग पहेली

नीचे दी गई वर्ग पहेली में से सब्जियों के नाम छाँटकर लिखिए। प्रत्येक वर्ग किसी न किसी उत्तर का अंग है।

मू	लौ	की	तो	क	रौं	दा	चौ
ली	चु	कं	द	र	सिं	ला	ल
क	म	डी	ज	द	भ	सीं	ड़ा
रे	ट	मा	ट	र	मे	बैं	बं
ला	र	ह	प	क	थी	ग	द
ब	थु	आ	ल	ह	सु	न	गो
क	द्दू	लू	क	फू	ल	गो	भी

प्रिय पाठकगण,
आप उपर्युक्त तालिका में से सबसे अधिक सब्जियों के नाम खोजकर पत्रिका प्रकाशक को अपने नाम और पते के साथ भेज सकते हैं। पहले पाँच प्रेषकों के नाम पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किए जाएँगे।

साभार – गूगल

संपादक मण्डल

मुख्य संपादक : आदित्य कुमार उपाध्याय

सहायक संपादक मण्डल : अवन्या जसरासरिया

आवरण पृष्ठ सज्जा : ध्वनि देवरा

छायाचित्र : गूगल एवं कैनवा

फोटोग्राफ : ए.वी.एस. फोटोग्राफ सोसायटी

शिक्षक मण्डल : हिंदी विभाग

मार्गदर्शक : डॉ. अमित जुगरान

संपादकीय पता
दि असम वैली स्कूल
बालीपारा, सोनितपुर
असम - 784101

अस्वीकरण:- उड़ान पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएँ विद्यार्थियों की स्वत्रंत्र अभिव्यक्ति हैं। विद्यालय, विद्यार्थियों की निजी अभिव्यक्ति के प्रति तटस्थ भाव रखता है।